शिक्षा मनोविज्ञान

राजस्थान क्लासेज

आदर्श सर द्वारा

हस्तलिखित नोट्स

राजस्थान क्लासेज

Website:- Rajasthanclasses.in

आदर्श कुमावत (राजस्थान क्लासेज)

आदर्श सर द्वारा

शिक्षा मनोविज्ञान

SUBSCRIBE US ON WEBSITE RAJASTHAN CLASSES

सामान्य ज्ञान
5000+ प्रश्न
For All Exam's
Free Download

SSC Exam's
CGL-CHSL-MTS-GD
Top Questions

राजस्थान सामान्य ज्ञान
हस्तलिखित नोट्स
निशुल्क डाउनलोड

Latest Job's Update
See All Update
Exam Date News

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AIL Exam's

PTET 2022
Complete Course
यहां से डाउनलोड करें

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

BSTC 2022
Complete Course
यहां से डाउनलोड करें

राजस्थान पुलिस कांस्टेबल
Complete Course
~~301/~~ - Now Free

भारत सामान्य ज्ञान
सम्पूर्ण टेस्ट क्विज
अपनी तैयारी को परखें

वनरक्षक वनपाल
सम्पूर्ण कोर्स
अब वर्दी लेना तय

टॉप 1000 प्रश्न
ई - बुक सामान्य ज्ञान
डाउनलोड करलो

शिक्षा मनोविज्ञान

(Educational psychology)

मनोविज्ञान का अर्थ →

मनोविज्ञान का अतीत 500 ई.पू. से प्रारम्भ हो जाता है जबकि इतिहास 16 वीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है।

⇒ एबिंगहास के अनुसार - मनोविज्ञान का अतीत बहुत लम्बा है, जबकि इतिहास बहुत छोटा।

⇒ मनोविज्ञान को 500 ई. पू. दर्शनशास्त्र की एक शाखा माना जाता था जिसका नाम था "मनादर्शन"

⇒ मनादर्शन शब्द का प्रयोग अरस्तु ने अपनी पुस्तक D- ऐनीमा में किया।

⇒ मनोविज्ञान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1590 ई. में "रुडोल्फ गोयकर" ने अपनी पुस्तक "Psychologia" में किया

⇒ मनोविज्ञान का जनक - अरस्तु, जननी - दर्शनशास्त्र

⇒ मनोविज्ञान को अंग्रेजी में साइकोलॉजी "Psychology"

⇒ साइकॉलोजी शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के दो शब्द "साइकी" व "लोगस" से मिलकर हुई। साइकी का अर्थ - आत्मा, तथा लोगस का अर्थ - अध्ययन अर्थात् साइकॉलोजी का शाब्दिक अर्थ - आत्मा का अध्ययन।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

⇒ मनोविज्ञान के अर्थ में परिवर्तन हुए जिसका स्पष्ट वर्णन -

* (1) मनोविज्ञान - आत्मा का विज्ञान
- प्लेटो, अरस्तु, डेकार्ट आदि ने (यूनानी दार्शनिकों) मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान कहा।
→ मनोविज्ञान की यह परिभाषा 16वीं सदी तक रही। बाद में इस परिभाषा को अस्वीकार कर दिया।

* (2) मनोविज्ञान - मन या मास्तिष्क का विज्ञान -
↳ इटली के दार्शनिक पॉम्पोनाज़ी का नाम विशेष
↳ 17वीं शताब्दी के दार्शनिकों ने ये परिभाषा दी लेकिन मनोवैज्ञानिक मन/मास्तिष्क की प्रकृति तथा स्वरूप को स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं कर सके परिणामस्वरूप ये परिभाषा भी अमान्य कर दी गई।

* (3) मनोविज्ञान - चेतना का विज्ञान
↳ 19वीं शताब्दी में ये परिभाषा दी गई।
↳ प्रमुख विद्वान - वाइट्स, विलियम जेम्स विलियम वुन्टस तथा जेम्स सली

→ इसमें मनोवैज्ञानिकों में मतभेद उत्पन्न हो गए क्योंकि 'चेतन मन' के अतिरिक्त 'अचेतन मन' और 'अर्द्धचेतन मन' भी होते हैं जो स्वप्नावस्था और विक्षिप्तावस्था में मनुष्य की क्रियाओं को प्रभावित करते हैं।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

↳ मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक "आउटलाइन साइकोलोजी" के पृष्ठ 16 पर चेतना को बुरा शब्द कहकर आलोचना की कि चेतना एक बहुत बुरा शब्द है और यह मनोविज्ञान के लिए बहुत ही दुर्भाग्य की बात है कि यह शब्द साधारण प्रयोग में आ गया।

↳ प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक - विलियम वुंट
↳ 1879 में जर्मनी में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला।

(5) मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभूति का विज्ञान।
↳ 20 वी शताब्दी में व्यवहार के रूप में स्वीकार
↳ मनोवैज्ञानिक - वुडवर्थ, स्किनर, वाटसन आदि

आज मनोविज्ञान न केवल बाह्य व्यवहार का अध्ययन करता है वरन आन्तरिक अनुभूतियों का भी अध्ययन करता है। व्यवहार की व्याख्या जब तक कि अनुभूति द्वारा नहीं की जाती है उसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता है।
↳ इस प्रकार मनोविज्ञान केवल व्यवहार का विज्ञान न होकर यह व्यवहार व अनुभूति का विज्ञान है।

* जेम्स ड्रावर - जीवन की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के प्रति मनुष्य अथवा पशु की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया ही व्यवहार है। (मनुष्य एवं पशु की प्रतिक्रिया व्यवहारी

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

मनोविज्ञान की परिभाषाएं →

* क्रो व क्रो → मनोविज्ञान सीखने से सम्बंधित मानव विकास के "कैसे" की व्याख्या करता है शिक्षा सीखने के "क्या" को प्रदान करने की चेष्टा करती है। (मनोविज्ञान - कैसे, शिक्षा - क्या)

* वारेन के अनुसार - मनोविज्ञान जीवधारी तथा वातावरण की पारस्परिक अन्तःक्रिया से सम्बंधित विज्ञान है। (वातावरण की पारस्परिक अन्तक्रिया)

* मन → आधुनिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज से है। (व्यवहार की वैज्ञानिक खोज)

* वाटसन - मनोविज्ञान को व्यवहार के धनात्मक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है। (धनात्मक)

* क्रो व क्रो → मनोविज्ञान, मानव व्यवहार व मानव सम्बंधो का अध्ययन है। (मानव सम्बंधो का अध्ययन)

* वुडवर्थ → मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले मानव व्यवहारो का विज्ञान है। (वातावरण के सम्पर्क में मानव व्यवहार)

* गैरिसन व अन्य → मनोविज्ञान का सम्बंध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से है। (प्रत्यक्ष मानव व्यवहार)

* मैक्डूगल → मनोविज्ञान आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है। (व्यवहार न यथार्थ विज्ञान)

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

मनोविज्ञान की शाखाएँ के "Branches"

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. तुलनात्मक मनोविज्ञान
4. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
5. समाज मनोविज्ञान
6. औद्योगिक मनोविज्ञान
7. बाल मनोविज्ञान
8. किशोर मनोविज्ञान
9. प्रौढ़ मनोविज्ञान
10. विकासात्मक मनोविज्ञान
11. पशु मनोविज्ञान
12. निदानात्मक/उपचारात्मक मनोविज्ञान
13. परा-मनोविज्ञान
14. शिक्षा मनोविज्ञान।

* शिक्षा का अर्थ *

↳ अंग्रेजी शब्द "एजुकेशन" जिसको लैटिन भाषा में ऐजुकेटम शब्द से विकसित किया
ऐजुकेटम शब्द (E) तथा डयूको (Duco) शब्दो से मिलकर बना है, E का अर्थ- अन्दर से, डयूको-आगे बढाना अर्थात् - ऐजुकेशन का अर्थ- अन्दर से आगे बढाना।

↳ ऐजुकेयर एवं ऐजुशियर शब्दो को भी ऐजुकेशन शब्द के मूल के रूप में स्वीकार किया जाता है।

* शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियो को अन्दर से बाहर की ओर उचित दिशा में विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* शिक्षा मनोविज्ञान *

शिक्षा - मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बंध अध्यापन व अधिगम से है।
↳ स्किनर के अनुसार

↳ मनोविज्ञान की शाखा शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पति सन् 1900 ई. में मानी जाती है।

↳ शिक्षा मनोविज्ञान को स्पष्ट व निश्चित स्वरूप प्राप्त हुआ → प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक के प्रयासो से →
→ थार्नडाइक, टरमन, स्टेनले हॉल जड़ इत्यादि ✓

* शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ *

↳ दो शब्दों के संयोग से बना - शिक्षा तथा मनोविज्ञान
शाब्दिक अर्थ - शिक्षा सम्बंधी मनोविज्ञान ✓
✓ कहा जा सकता है कि शिक्षा - मनोविज्ञान शैक्षणिक परिस्थितियो में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

* शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ *

* कॉलसनिक के अनुसार - शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान के सिद्धान्तो व परिणामो का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग है → W.B. Kolesnik

* क्रो व क्रो - शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवो का वर्णन तथा व्याख्या करता है।
(सीखने के अनुभवो का वर्णन व व्याख्या)

* स्टीफन - शिक्षा मनोविज्ञान, शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन है। (शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन)

* स्किनर - शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियो में अध्ययन करता है।

* प्रो. ट्रो के अनुसार - शैक्षणिक परिस्थितियो का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना ही शिक्षा-मनोविज्ञान है

* जेम्स ड्रेवर - शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तो तथा खोजो के प्रयोगो के साथ ही शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से सम्बंधित है।

* उपर्युक्त परिभाषाओ के आधार पर - शिक्षा मनोविज्ञान वह विधायक विज्ञान है जो शैक्षणिक परिस्थितियो का मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर, उन मानवीय व्यवहारों तथा व्यक्तित्व का विश्लेषण करती है जिनका उत्थान, विकास और निर्देशन शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया द्वारा होता है।

* शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति *

↳ पील के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान "शिक्षा का विज्ञान है।

* इसमे नियमों व सिद्धान्तो का प्रयोग किया जाता है।
* शिक्षा मनोविज्ञान सदैव सत्य की खोज मे रहता है अर्थात् सीखने वाले के व्यवहार का उसके शैक्षणिक वातावरण के सम्बन्ध में अध्ययन करता है।

* यह एक व्यवहारिक - विधायक विज्ञान है।

* शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध अतीत की अपेक्षा वर्तमान की घटनाओ के क्या और क्यों से है।

* यह एक रचनात्मक विज्ञान है।
यह शिक्षा के कैसे - कब और कहां जैसे प्रश्नो के उत्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है।

* इसके सिद्धान्त सार्वभौमिक होते है।
* इसके सभी सिद्धान्तो का पुष्टिकरण किया जा सकता है।

* विज्ञान की भांति इन्हे समान परिस्थितियो मे व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

(शिक्षार्थी / अध्येता / लर्नर)

↳ मनोवैज्ञानिको ने बालक या शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु माना है जिसके चारो ओर शिक्षा प्रक्रिया घूमती रहती है।

→ शिक्षा प्रक्रिया का प्रमुख अंग बालक है।

= बालक / अध्येता के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

① ↳ वंशानुगत एवं वातावरण का ज्ञान →
ये ज्ञान बालक को होता है जिससे वह खराब वातावरण से अपने को दूर रखने का उपाय कर सकता है।

२. मानसिक क्रियाओं का ज्ञान :- बालक को सीखने, स्मरण करने, तर्क करने, विचार करने आदि मानसिक क्रियाओ का ज्ञान होता है।

३. योग्यताओं और क्षमताओं का ज्ञान →
मनोवैज्ञानिक परीक्षणो द्वारा बालक को उसकी योग्यताओ एवं क्षमताओ का ज्ञान होता है। जिसकी सहायता से वह अपने अनुकूल विषय चुन सकता है।

४. मूल प्रवृतियों व रुचियो का ज्ञान :-
बालक को उसकी रुचियो और मूल प्रवृतियो का ज्ञान मनोविज्ञान की सहायता से होता है कोई भी व्यवहार उसकी रुचि एवं मूल प्रवृति के अनुसार होगा है इस प्रकार वह अपने व्यवहार में नियत्रंण भी कर सकता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

5. आत्म मूल्यांकन एवं मापन की विधियो का ज्ञान -
↳ बालको को स्वयं के मूल्यांकन और मापन की विधियो का ज्ञान मनोविज्ञान की सहायता से हो जाता है जिससे वे किसी भी विषय मे अपनी स्थिति का अंदाजा लगाकर प्रगति कर सकते है।

"शिक्षक" (Teacher)
↳ शिक्षण प्रदान करने की महत्वपूर्ण धुरी शिक्षक है।
↳ वर्तमान मे एक सफल शिक्षक - वो है - जिसमें विषय का समुचित ज्ञान, शिक्षार्थी का ज्ञान, शिक्षण विधियो का ज्ञान, शिक्षा के उद्देश्यो का ज्ञान।

* फ्रॉबेल ने अपनी शिक्षा प्रणाली में शिक्षको को बालोद्यान का कुशल माली कहा है.

* कालेसनिक - शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक विशेष को यह निर्णय करने में सहायता दे सकता है कि वह विशिष्ट परिस्थितियो में अपनी विशिष्ट समस्याओ का समाधान किस प्रकार करे।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

*. शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

(1)* स्वयं का ज्ञान एवं तैयारी :
किसी कार्य में कुशल व्यक्ति ही कार्य मे सफल हो सकता है शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक अपने स्वभाव, बुद्धि स्तर, व्यवहार, योग्यता आदि का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्किनर का विचार - शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षको की तैयारी की आधार शिला है।

(2) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओ का ज्ञान ↓
शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन से शिक्षक को बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओ का ज्ञान प्राप्त होता प्रत्येक अवस्था में बालको की शारिरिक, मानसिक सामाजिक व संवेगात्मक विशेषताओ का ज्ञान प्राप्त करके उनके लिए शिक्षण विधियो तथा क्रियाओं का चुनाव करता है।

(3) बालक के स्वभाव व व्यवहार का ज्ञान →
शिक्षक मनोविज्ञान की सहायता से बालक की मूलप्रवृतियो और संवेगो का ज्ञान प्राप्त करता है और वह इनका उत्तम शिक्षण एवं निर्देशन में सफल प्रयोग करता है।

(4) बालको के चरित्र निर्माण में सहायक :
शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक छात्रों में नैतिक गुणो का विकास कर सकता है, बालको के चारित्रिक विकास में शिक्षक की सहायता करता है।

5. बालक की आवश्यकताओं का ज्ञान
↳ आवश्यकताएं जैसे - प्रेम, आत्मसम्मान
स्वतंत्रता, सहानुभूति आदि। छात्रों की ये आवश्यकताएं
पूर्ण हो जाने पर उनका स्वाभाविक विकास होता है।

6. बालक की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान -
↳ मनोवैज्ञानिक खोजो से स्पष्ट है कि सभी
बालक एक जैसे नही होते।
उनकी रुचियां, योग्यताएं, बुद्धि, कार्यक्षमता आदि में अन्तर।

(7.) बालको के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास
शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक को उन विधियो का
ज्ञान कराता है जिससे बालक का विकास किया जा सके।

(8) कक्षा की समस्याओ का ज्ञान -
↳ जैसे अनुशासन हीनता, बाल अपराध, छात्रो का पिछड़ापन
समस्याओ के कारणो को खोजना शिक्षक का कार्य।

(9) अनुशासन स्थापित करने मे सहायक
↳ शिक्षक प्रेम व सहानुभूति से अनुशासन
स्थापित करने का प्रयास करता है।

(10) उपयुक्त शिक्षण विधियो का प्रयोग →
शिक्षण विधियो का स्थान महत्वपूर्ण है।
शिक्षा मनोविज्ञान से शिक्षक को इस बात का
ज्ञान होता है कि किन परिस्थितियो में किस
प्रकार के बालको के लिए किस प्रकार की शिक्षण
विधि का प्रयोग होगा।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

11. मूल्यांकन की नवीन विधियों का प्रयोग -
↳ शिक्षक की सफलता छात्रों की प्रगति पर निर्भर करती है, शिक्षा मनोविज्ञान मूल्यांकन की ऐसी विधियों का ज्ञान कराता है जिनकी सहायता से शिक्षक छात्रों की प्रगति के माध्यम से अपना मूल्यांकन कर सकता है।

⇒ स्कीनर के अनुसार - शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक के रूप में अपनी स्वयं की कुशलता का मूल्यांकन करने में सहायता देता है।

⇒ कुप्पु स्वामी के अनुसार - मनोविज्ञान शिक्षकों को अनेक प्रत्यय और सिद्धान्त प्रदान करके उनकी उन्नति में योग देता है। (प्रत्यय व सिद्धान्त)

* शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र *

(1) वंशानुक्रम (2) विकास
(3) व्यक्तिगत भिन्नता (4) व्यक्तित्व
(5) विशिष्ट बालक (6) अधिगम प्रक्रिया
(7) पाठ्यक्रम निर्माण (8) मानसिक स्वास्थ्य
(9) शिक्षण विधियां (10) निर्देशन व परामर्श
(11) मापन एवं मूल्यांकन (12) समूह गतिशीलता
(13) अनुसंधान ✓

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

* मनोविज्ञान के सम्प्रदाय और उनका शिक्षा से सम्बंध

(1) संरचनावादी सम्प्रदाय - (मस्तिष्क की संरचना क्या है)
प्रतिपादन व विकास - विलियम वुण्ट (जर्मनी)
विशेष - पूर्ण ध्यान चेतना तथा विश्लेषण की ओर
समय - (1832 - 1920)

(2) कार्यात्मवादी सम्प्रदाय →
→ प्रतिपादक / जनक - विलियम जेम्स
→ संयुक्त राज्य अमेरिका में मनोविज्ञान के जनक ।
→ समय - (1842 - 1910)
→ व्यवहार और मानसिक जीवन के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया।
→ इसमें पाठ्यक्रम, पद्धतियों, तकनीकों, मानव व्यवहार की व्याख्या तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन हेतु वैज्ञानिक पद्धतियों की जोरदार वकालत कर शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावित किया।

(3) व्यवहारवादी सम्प्रदाय -
↳ प्रतिपादक - जॉन ब्रोडस वाटसन (1878 - 1958)
↳ संरचनावादी व कार्यात्मवादी के विपरित ।
↳ बच्चे की अच्छी अभिवृद्धि तथा विकास के लिए विद्यालय में उचित शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता पर जोर देकर इसने शिक्षण जगत में क्रान्ति ला दी।
→ शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहार में परिवर्तन करने अथवा उसे सुधारने के लिए दण्ड तथा अप्रिय अनुभवों आदि के स्थान पर पुरस्कार का उपयोग - इसी सम्प्रदाय की देन है।

4. * गेस्टाल्ट सम्प्रदाय =
↳ प्रतिपादक - कोहलर
↳ सदस्य - मैक्स वर्दीमर, कुर्त कोफ्का, कोहलर, कुर्त लेविन
⇒ परिणामस्वरूप इस वैचारिक सम्प्रदाय ने विभिन्न अधिगम क्षेत्रों तथा अनुभवों से सम्बन्धित पाठ्यक्रम और विषयवस्तु को पूर्णरूप में व्यवस्थित करने का मार्ग दिखाया तथा शिक्षण में "पूर्ण से अंश" की ओर पद्धति पर जोर दिया गया।

5. * मनोविश्लेषणवादी सम्प्रदाय -
जन्मदाता - सिगमण्ड फ्रायड (1856-1936)
वियना के चिकित्सक
→ सम्प्रदाय ने नए आयाम - मानव व्यवहार की पूर्णता जिसमें चेतन, अर्द्धचेतन, अचेतन, मन की संरचना दमन की कल्पना, काम विकास आदि शामिल हैं

6. * प्रेरकीय सम्प्रदाय →
जन्मदाता - विलियम मैक्डूगल
→ इनके विचार हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में प्रयोजनात्मक व्यवहार होते हैं। सभी व्यवहार मूल प्रवृत्तियों, संवेदनाओं तथा रुचियों द्वारा प्रभावित होते हैं।
इस सम्प्रदाय ने बताया कि शिक्षक को मूल प्रवृत्तियों पर ध्यान रखते हुए संज्ञानात्मक, अनुभवात्मक तथा क्रियात्मक प्रवृत्तियों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। तथा शिक्षण के समय उन्हें उचित सामाजिक व्यवहार हेतु इच्छा, आत्म-सम्मान तथा चरित्र-निर्माण पर भी ध्यान देना चाहिए।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* मनोवैज्ञानिको का शिक्षा में योगदान *

1. ई. एल. थार्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।

2. जॉन डी. वी. प्रगतिशील शिक्षा के जनक माने जाते।

3. डेस्कार्टिज, कॉमिनियस, जॉन लॉक, रूसो आदि ने शिक्षा मनोविज्ञान का विकास किया।

4. थार्नडाइक, जड, हरमन आदि के प्रयासो से शिक्षा मनोविज्ञान को स्पष्ट स्वरूप प्राप्त हुआ।

5. कैटल ने व्यक्तित्व के 16 शीलगुण (16PF) का निर्माण किया।

6. मॉर्गन एवं मुर्रे ने 1935 मे व्यक्तित्व मापन के लिए प्रासंगिक अन्तबोध परीक्षण (T.A.T.) का निर्माण

7. ल्योपोल्ड बैलॉक ने 1948 में व्यक्तित्व मापन के लिए बाल सम्प्रत्यक्ष परीक्षण (C.A.T.) का निर्माण

8. हरमन रोर्शा ने 1921 में स्याही धब्बा परीक्षण का निर्माण किया।

9. गाल्टन ने 1879 में स्वतंत्र शब्द साहचर्य विधि का निर्माण किया।

10. पाइन व टैण्डलर ने वाक्य पूर्ति परीक्षण का विकास

11. जॉन लॉक ने अधिगम पर बल देते हुए इन्द्रियानुभवाद का प्रवर्तन किया।

12. डॉ डी.वी. प्रगतिशील शिक्षा के जनक माने जाते हैं

12. रूसो ने अपने ग्रन्थ Emile मे बालक की शिक्षा की विस्तृत योजना प्रस्तुत की।

13. विलियम स्टर्न द्वारा सर्वप्रथम बुद्धिलब्धि का सम्प्रत्यय दिया गया।

14. टर्मन के द्वारा बुद्धिलब्धि का सूत्र दिया गया।

15. टर्मन के द्वारा बुद्धिलब्धि के सम्प्रत्यय को विकसित किया

16. बेंजामिन ब्लूम के द्वारा शैक्षिक उद्देश्यो का वर्गीकरण किया गया।

17. मार्गरीड मीड के द्वारा अनुदैर्ध्य अध्ययन सामोआ द्वीप पर किया गया।

18. हर्बर्ट और फ्रोबेल ने शिक्षा को मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तो पर आधारित करने का उपागम विकसित किया।

19. फ्रोबेल ने किंडरगार्टन विधी द्वारा शिक्षा में आरम्भिक अनुभवो का महत्व स्पष्ट किया।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

20. किलपैट्रिक ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रोजेक्ट प्रणाली को जन्म देते हुए करके सीखने पर बल दिया।

21. मिस हेलेन पार्कहर्स्ट ने डाल्टन प्रणाली को जन्म दिया जिसमें छात्र को अपनी योग्यता क्षमता व रुचि के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता होती है।

22. डॉ. कार्लटन वाशबर्न ने विनेटिका (इकाई) प्रणाली का प्रतिपादन किया
इस योजना में बालक को कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता ✓

23. डॉ. ओविड डेक्रोली ने डेक्रोली प्रणाली का प्रतिपादन ✓
उसके अनुसार बालक को शिक्षा उसके जीवन से ही मिलनी चाहिए।

24. डॉ. मेरिया मॉन्टेसरी ने मान्टेसरी प्रणाली का प्रतिपादन किया, यह विधि मन्द बुद्धि बालको के लिए बहुत उपयोगी ✓
इस प्रणाली में- स्वतंत्रता, आत्म अनुशासन, आत्मनिर्भरता व्यावहारिक शिक्षा, व्यक्तिगत शिक्षा, कर्मेन्द्रियो एवं ज्ञानेन्द्रियो की शिक्षा, शामिल है।

25. आर्मस्ट्रांग ने ह्यूरिस्टिक पद्धति का प्रतिपादन किया, इसका अर्थ है- मैंने खोज लिया।
↳ विज्ञान के लिए विशेषकर लाभदायक है।

26. महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा प्रणाली यह बालक के सर्वांगीण विकास हेतु बल देती है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

27. विलियम जेम्स ने 1890 में अपना ग्रन्थ Principles of Psychology में प्रकाशित किया।

28. स्टेनले हॉल ने 1891 में अमेरिका में बालकों के अध्ययन सम्बन्धी प्रथम पत्रिका Pedagogical Seminary आरम्भ की।

29. 1893 में फिलोडेल्फिया में विटमर द्वारा कुसमायोजित बालकों हेतु एक निदानात्मक केन्द्र स्थापित ✓

30. हल ने 1925 में अपने ग्रन्थ A Theoretical Basis of human Behaviour में मानव व्यवहार को जैविकीय-सामाजिक माना

31. टॉलमैन ने 1932 में अपने ग्रन्थ Purpose Behaviour in Animal and man में प्रयोजनमय व्यवहारवाद का प्रतिपादन किया

32. स्किनर ने 1938 में अपने ग्रन्थ The Behaviour of organisms द्वारा अधिगम के क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

33. → ई. एल. थार्नडाइक ने अधिगम के मुख्य तथा गौण नियमों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

34. इवान पेट्रोविच पावलव ने अधिगम के अनुकूलित → अनुक्रिया सिद्धान्त या शास्त्रीय-अनुबन्ध सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

35. एडवर्ड वाटसन ने अधिगम के सामाजिक-अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

36. लिखित ग्रन्थ →

* मैक्स वर्दीमर → Production thinking ✓
* कोफ्का - Principle of Gestalt Psychology ✓
* कोहलर - Gestalt Psychology ✓
* कुर्तलेविन - Field theory and learning. ✓

37. के. एल. लैशले ने 1923 में अपना ग्रन्थ - The Behaviouristic Interpretation of Consciousness प्रकाशित कर अंतर्दर्शन विधि की त्रुटियों को प्रकट किया।

38. जेराम एस. ब्रूनर ने पियाजे के संज्ञानवादी विकास सिद्धान्त की व्याख्या की।

39. ब्रूनर ने शिक्षा की प्रक्रिया (The Process of Education) नामक पुस्तक की रचना कर शिक्षा क्षेत्र में योगदान ✓

40. ब्रूनर ने संरचनात्मक अधिगम को महत्व देते हुए संरचनात्मक अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

41. अब्राहम मैस्लो ने 1962 में मानवतावाद सम्प्रदाय की स्थापना की जिसे मनोविज्ञान का तीसरा बल कहा जाता है।

42. Field of psychology → गिलफर्ड की पुस्तक ✓

43. An Introduction to Social psychology - विलियम ✓

44. प्रश्नावली का निर्माण - वुडवर्थ ने किया।

45. शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है। → स्किनर ✓

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

अधिगम "Learning"

अधिगम की अवधारणा →

→ गार्डनर मरफी - सीखने या अधिगम शब्द में वातावरण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित है।

⇒ वुडवर्थ - किसी भी ऐसी क्रिया को जो कि व्यक्ति के विकास में सहायक हो और उसके वर्तमान व्यवहार और अनुभवों को जो कुछ वे हो सकते थे, उनसे भिन्न बनाती है सीखने की संज्ञा दी जा सकती है।

⇒ किंग्स्ले एवं गैरी - अभ्यास तथा प्रशिक्षण के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार करने अथवा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को सीखना कहते है (Short - अभ्यास व प्राशिक्षण से नवीन तरीके का व्यवहार)

⇒ क्रो व क्रो → सीखना, आदतों ज्ञान और अभिवृतियो का अर्जन है। यह व्यक्ति को अपने अभिप्राय अथवा लक्ष्य को पाने में समर्थ बनाती है।

⇒ (5) हिलगार्ड → सीखना एवं अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई क्रिया आरम्भ होती है अथवा परिस्थिति से सामना होने पर प्रक्रिया द्वारा परिवर्तित की जाती है।

* अधिगम का अर्थ एवं परिभाषाएं

* व्यक्ति नित्य अपने जीवन में नए-नए अनुभव एकत्र करता रहता है ये नवीन अनुभव व्यक्ति के व्यवहार में वृद्धि तथा परिवर्तन करते हैं इसलिए ये अनुभव और इनका उपयोग ही सीखना या अधिगम कहलाता है।

परिभाषाएं :-

1. कॉलविन → पूर्व निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा हुए परिवर्तन को अधिगम कहते हैं
(पूर्व निर्मित व्यवहार - कॉलविन)

2. वुडवर्थ - नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया ही अधिगम है।
(नवीन ज्ञान व नवीन प्रतिक्रियाएं - वुडवर्थ)

3. क्रो व क्रो → ज्ञान व अभिवृत्ति की प्राप्ति ही अधिगम

4. मार्गन व गिलिलैण्ड - सीखना अनुभव के परिणाम-स्वरूप प्राणी के व्यवहार में परिमार्जन है, जो प्राणी द्वारा कुछ समय के लिए धारण किया जाता है।
(प्राणी के व्यवहार में परिमार्जन - गिलीलैण्ड व मार्गन)

5. गेट्स व अन्य - प्रशिक्षण व अनुभव के द्वारा व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।

6. गिलफोर्ड - व्यवहार के फलस्वरूप व्यवहार में किसी प्रकार का परिवर्तन आना ही सीखना अथवा अधिगम है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

स्किनर - प्रगतिशील व्यवहार व्यवस्थापन की प्रक्रिया को सीखना कहते है।

अधिगम की विशेषताएं :-

* अर्जित व्यवहार की प्रकृति अपेक्षाकृत स्थायी होती है।
* सीखना एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
* सीखने की प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है।
* सीखना व्यवहार में परिवर्तन है।
* सीखना नई परिस्थितियों से अनुकूलन है।
* सीखना नए-पुराने अनुभवों का संगठन है।
* सीखना उद्देश्यपूर्ण होता है।
* सीखना वातावरण एवं क्रियाशीलता की देन/उपज है।
* सीखना खोज करने की प्रक्रिया है।
* सीखना सामाजिक एवं व्यक्तिगत दोनों है।
* सीखना विकास की प्रक्रिया है।
* सीखने हेतु एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में स्थानान्तरण होता है।
* सीखने के द्वारा शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
* सीखने के द्वारा विद्यार्थी को उचित वृद्धि एवं विकास में सहायता पहुंचती है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

* सीखना व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।
* सीखना समायोजन में सहायक है।

* अधिगम एवं विकास एक-दूसरे के पर्याय नहीं है।
* अधिगम के द्वारा व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाए जा सकते है।

* अधिगम एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जिसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है।

* अधिगम में समय लगता है
* अधिगम सक्रिय है।
* अधिगम परिवर्तन है।
* अधिगम एक - विवेकपूर्ण प्रक्रिया है।

अधिगम के सोपान (Steps of learning)

↳ आवश्यकता / अभिप्रेरणा
↳ लक्ष्य / उद्देश्य
↳ बाधाएँ
↳ तत्परता
↳ अधिगम स्थिति / वातावरण
↳ पुनर्बलन
↳ वातावरण के साथ अन्तक्रिया / विभिन्न अनुक्रियाएँ
↳ अनुभवो का संगठन
↳ व्यवस्था में स्थायी परिवर्तन ।

* आगे बढता हुआ व्यक्ति सभी अनुक्रियाओ का संगठन करता हुआ अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

अधिगम के प्रकार Types of learning

① ज्ञानात्मक अधिगम ② भावात्मक अधिगम
③ क्रियात्मक अधिगम।

① ज्ञानात्मक अधिगम - सीखने का यह तरीका बौद्धिक विकास तथा ज्ञान अर्जित करने की समस्त क्रियाओं पर प्रयुक्त होता है, क्रियाएं निम्न है।

(i) प्रत्यक्षात्मक सीखना - जब किसी वस्तु को देखकर सुनकर या स्पर्श करके इसका ज्ञान प्राप्त किया जाता है तो उसे प्रत्यक्षात्मक सीखना कहते हैं।

(ii) प्रत्ययात्मक सीखना - जब बालक साधारण ज्ञान या अनुभव प्राप्त कर लेता है तो वह तर्क, चिंतन और कल्पना के आधार पर सीखने लगता है इस प्रकार वह अनेक अमूर्त बातें सीख जाता है।

(iii) साहचर्यात्मक सीखना - जब पुराने ज्ञान तथा अनुभव के द्वारा किसी तथ्य को सीखा जाता है तो उसे साहचर्यात्मक सीखना कहते हैं।

② भावनात्मक अधिगम - इसका सम्बंध बच्चों की कोमल भावना से है बच्चे किसी वस्तु को देखकर, आवाज को सुनकर या किसी रंग को निखरकर आनन्द प्राप्त कर सके।

③ क्रियात्मक अधिगम - इस अधिगम से किसी कला में निपुणता प्राप्त की जाती है, संगीत, नृत्य, मॉडल, ड्राइंग बनाने का कौशल।
कौशल के चरण- ① तैयारी ② उद्देश्य ③ प्रस्तुतीकरण ④ अभ्यास ⑤ शुद्धिकरण ⑥ पुनः अभ्यास ⑦ प्रदर्शन

* रॉबर्ट गैने के अनुसार अधिगम के प्रकार *

रॉबर्ट गैने ने 1965 में अपनी पुस्तक के अन्तर्गत (Condition of learning) अधिगम के आठ प्रकार बताए हैं। ये प्रकार सरल से जटिल की ओर हैं।

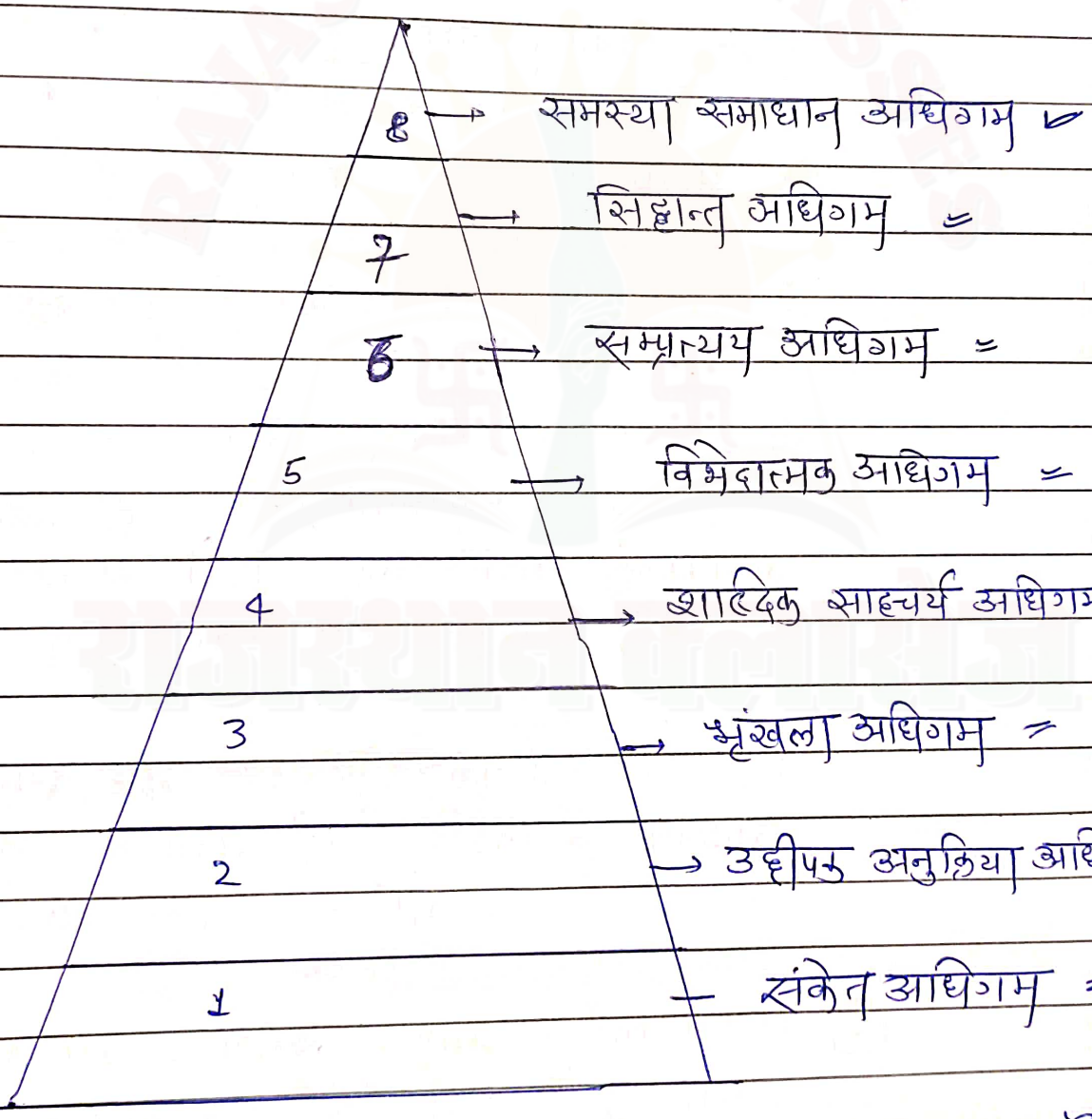

रॉबर्ट गैने द्वारा अधिगम के 8 प्रकार इस प्रकार हैं।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक *

⇒ (1) शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक :-
1. सीखने की इच्छा शक्ति
2. शैक्षिक पृष्ठभूमि
3. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य
4. सीखने वाली अभिवृत्ति
5. सीखने का समय व अवधी, 6. अभ्यास
7. अभिप्रेरणा 8. परिपक्वता व. बुद्धि :-

⇒ 2. शिक्षक से सम्बन्धित कारक =
1. विषय का ज्ञान (ii) अनुभव
3. विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण - सरल से जटिल।
4. मनोविज्ञान का ज्ञान, 5. शिक्षक का व्यवहार
6. शिक्षण विधी, 7. शिक्षक का व्यक्तित्व
8. समय-सारणी, 9. पाठ्य सहगामी क्रियाएं
10. बाल-केन्द्रित शिक्षा :-

⇒ (3) विषयवस्तु से सम्बन्धित कारक :-
(1) विषय वस्तु की प्रकृति
(2) विषय वस्तु का आधार
(3) विषय वस्तु की भाषा शैली
(4) विषय वस्तु की उद्देश्य पूर्णता
(5) उदाहरण प्रस्तुतीकरण - उदाहरण से नियम अर्थात् आगमन से निगमन, ज्ञात से अज्ञात :-
(6) विषय वस्तु का रूचिकर होना :-

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

Theories of learning

* अधिगम के सिद्धान्त *

अधिगम या सीखने के सिद्धान्त के अध्ययन के माध्यम से शिक्षकों को वर्तमान शैक्षिक सिद्धान्तों प्रचलित एकरूपता एवं परस्पर विरोध का परिज्ञान हो सकता है। – बिगे एवं हंट

(1)

(1). थार्नडाइक (1874-1949) का उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत

*→ इस सिद्धान्त में उत्तेजक और अनुक्रिया के बीच सम्बन्ध बन जाते हैं। इसीलिए इस सिद्धान्त को सम्बन्धवाद और बंध सिद्धान्त भी कहते हैं।

(i) उद्दीपक प्रक्रिया का सिद्धान्त
(ii) सम्बन्धवाद का सिद्धान्त
(iii) ~~बंध~~ अधिगम का बंध सिद्धान्त
(iv) संयोजनवाद का सिद्धान्त
(v) प्रयास व त्रुटि का सिद्धान्त

सीखने के नियम

थार्नडाइक के अनुसार

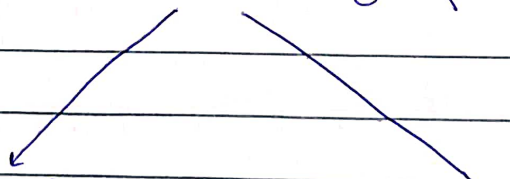

मुख्य नियम
- तत्परता
- अभ्यास
- प्रभाव/परिणाम

गौण नियम
- बहु-प्रतिक्रिया
- मनोवृत्ति
- आंशिक क्रिया
- आत्मीकरण
- साहचर्य परिवर्तन

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

थार्नडाइक का प्रयोग -
एक भूखी बिल्ली को पिंजरे में बन्द करके बाहर मछली का टुकड़ा रखा, बिल्ली ने बाहर आने के त्रुटिपुर्ण प्रयास किए अतत: पिंजरा खोलना सीखी इस प्रकार बिल्ली प्रयास एवं त्रुटि के द्वारा उद्दीपक (मछली) दिखते ही प्रतिक्रिया (लीवर दबाकर दरवाजा खोलना) सीख गई।

थार्नडाइक के अनुसार - सीखना सम्बंध स्थापित करना है सम्बंध स्थापित करने का कार्य मनुष्य का मास्तिष्क करता है

॥ उद्दीपक प्रक्रिया सिद्धान्त का शिक्षा में महत्व ॥

- बड़े व मन्द बुद्धि बालको के लिए अत्यंत उपयोगी
- बच्चो में धैर्य व परिश्रम के गुणो का विकास
- अनुभवो का लाभ उठाने की क्षमता विकसित करना
- बालको में परिश्रम के प्रति आशा का संचार करता है
- समस्या समाधान करने में सहायक सिद्धांत -

(2)

(2) सम्बन्ध - प्रतिक्रिया का सिद्धान्त :-
अन्य प्रचलित नाम (1) अनुकूलित - अनुक्रिया का सिद्धान्त
(II) शास्त्रीय अनुबंध का सिद्धान्त
(III) प्रतिस्थापक का सिद्धान्त
(IV) सम्बध सहज क्रिया सिद्धांत
(V) अनुबंधन का सिद्धान्त -

पावलव का प्रयोग - पावलव ने कुत्ते पर प्रयोग किया उसने कुत्ते को भोजन देने से पहले कुछ दिनो तक घण्टी बजाई उसके बाद केवल घण्टी बजाई भोजन दिया. फिर भी कुत्ते के मुंह से लार टपकने लगी, कुत्ते ने सीख लिया था कि भोजन मिलेगा
(घण्टी से)

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

इन्हें भी जरुर पढ़े?

SUBSCRIBE US ON WEBSITE RAJASTHAN CLASSES

- विषय अनुसार इ-बुक देखे यहाँ से
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

कम्प्यूटर ज्ञान

SUBSCRIBE US ON WEBSITE RAJASTHAN CLASSES

YouTube

Websites

घण्टी के प्रति कुत्ते की इस प्रतिक्रिया को पावलव ने सम्बंध सहज क्रिया कहा।
इस सिद्धान्त का सम्बन्ध शरीर विज्ञान से है

↳ भोजन को अनानुबंधिक उद्दीपक (Unconditional Stimulas) UCS

↳ भोजन से पूर्व उपस्थित घंटी को अनुबन्धिक उद्दीपक (CS) (Conditional Stimulas)

* इस प्रकार से सिखाने की प्रक्रिया को जहाँ अस्वाभाविक (कृत्रिम) उत्तेजक स्वाभाविक (प्राकृतिक) उत्तेजक का स्थान ग्रहण कर ले, अनुकूलित अनुक्रिया द्वारा सीखना कहा जाता है।

1. स्वाभाविक उत्तेजक (भोजन) → स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
(UCS) Unconditioned Stimulas (UCR) Uncon. Response

2. CS (Conditional Stimulus + UCS → स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
अस्वाभाविक उत्तेजक (घंटी) + स्वा. उत्तेजक (भोजन) (UCR)

3. CS (Conditional Stimulas) → CR
अनुकूलित उत्तेजक (घण्टी) अनुकूलित अनुक्रिया (लार)

* इस सिद्धान्त का महत्व -
1. क्रिया की पुनरावृति पर बल
2. यह सीखने की स्वाभाविक विधि क्रियाशीलता पर आधारित -
3. भाषा सिखाने व अच्छी आदतें सिखाने में उपयोगी
4. भय सम्बन्धी मानसिक रोगों के निराकरण में उपयोगी
5. अच्छे व्यवहार एवं उत्तम अनुशासन का निर्माण -

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त *
* कार्यात्मक प्रतिबद्धता सिद्धान्त
* क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त

↳ सिद्धान्त का प्रतिपादन - अमेरिकी मनोवैज्ञानिक बी-एफ. स्किनर ने 1938 में किया।
↳ स्किनर के प्रयोज्य क्रियाशील रहते हैं इसीलिए इस सिद्धान्त को क्रियाप्रसूत अनुबन्धन कहा जाता है।

* अभिप्रेरणा से उत्पन्न क्रियाशीलता ही सिखाने के लिए उत्तरदायी है, अभिप्रेरणा का आधार उद्दीपन है उद्दीपन भावी क्रिया को नियंत्रित करता है।

इनके अनुसार प्राणियों में दो प्रकार के व्यवहार होते हैं
① अनुक्रिया ② क्रिया प्रसूत

स्किनर का प्रयोग →
↳ स्किनर ने 1830 में सफेद चूहो का प्रयोग किया।
↳ उसने लीवर वाला बक्सा बनाया, लीवर पर चूहे का पैर पड़ते ही खट् की ध्वनि होती थी इस ध्वनि को सुनकर चूहा आगे बढता और उसे प्याले में भोजन मिलता। यह भोजन चूहे के लिए पुनर्बलन का कार्य करता।

* इस सिद्धान्त का शिक्षा में महत्व *
↳ अधिगम को स्वरूप प्रदान करने में इसका प्रयोग
↳ बालको के शब्द भण्डार में वृद्धि करने हेतु
↳ मानसिक रोगियो के निदानात्मक शिक्षण में उपयोगी
↳ कार्य के परिणाम की जानकारी प्राप्त होती है
↳ पुनर्बलन और संतोष द्वारा क्रिया को बल प्रदान करने में सहायक

शास्त्रीय अनुबंध व सक्रिय अनुबंध में अन्तर

(1) शास्त्रीय अनुबंध अनुक्रिया व्यवहार सम्बन्धी अधिगम में सहायक सिद्ध होता है।
✓ सक्रिय अनुबंधन सक्रिय व्यवहार सम्बंधी अधिगम में सहायक सिद्ध होता है

2. शास्त्रीय अनुबंध में वांछित अनुक्रिया अथवा व्यवहार उत्पन्न करने में उद्दीपक केन्द्रीय भूमिका रहती है इसीलिए इसे उद्दीपन जन्य अनुबन्धन भी कहते है।
✓ सक्रिय अनुबंध में अनुक्रिया की केन्द्रीय भूमिका रहती है इसलिए इसे अनुक्रिया जन्य भी कहा जाता।

3. शास्त्रीय अनुबंध में सीखने वाला जरा भी स्वतंत्र नहीं है सक्रिय अनुबंध में सीखने वाले को अनुक्रिया करने की काफी कुछ स्वतंत्रता होती है

4. शास्त्रीय अनुबंध में अनुबन्धन की शक्ति अनुबंधित अनुक्रिया की सामर्थ्य पर निर्भर करती है। जबकि सक्रिय अनुबंध में अनुबंधन की शक्ति को अनुक्रिया दर द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। प्रयोगो में इसकी माप सरल है।

5. शास्त्रीय अनुबंधन में अनुक्रिया उत्पन्न करने के लिए किसी सात उद्दीपन का होना नितांत आवश्यक है सक्रिय अनुबंध में व्यवहार अथवा अनुक्रिया के लिए न तो किसी सात उद्दीपन की आवश्यकता है और न उसके लिए किसी कारण के खोज की।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* सूझ तथा अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त *
* गेस्टाल्ट सिद्धान्त

↳ ये सिद्धान्त जर्मन स्कूल की देन है उदय - 20वी शताब्दी
↳ प्रतिपादक - मैक्स वर्दीमर, कोहलर, कोफ्का ।

↳ गेस्टाल्ट जर्मन भाषा का शब्द जिसका अर्थ होता है समग्राकृति या पूर्णाकार ।
↳ कोहलर ने सुल्तान नामक चिंपाजी का प्रयोग 1917 ई को कैनरी द्वीप पर किया ।

प्रयोग -
चिम्पाजी → कमरे मे बन्द → छत पर केले → सूझबूझ का प्रयोग → कमरे मे पडे बॉक्स पर चढकर केले प्राप्त करना ।

* गेस्टाल्ट सिद्धान्त के नियम *
1. समग्रता का नियम ।
2. समानता का नियम ।
3. समीपता का नियम ।
4. समापन का नियम ।
5. निरन्तरता का नियम ।

* शैक्षिक महत्व (शिक्षा मे महत्व)
1. छात्रो को नवीन ज्ञान देने से पहले जान ले कि छात्र का मानसिक व शारीरिक स्तर योग्य है भी या नही।
2. छात्रो की तर्कशक्ति, विचारशक्ति, कल्पना शक्ति मे विकास
3. समस्या समाधान विधी द्वारा सीखना इसी सिद्धान्त पर ।
4. रचनात्मक कार्यो के लिए विशेष उपयोगी ।
5. अनुसंधान के क्षेत्र मे अत्यधिक महत्व है ।
6 - कला - संगीत और साहित्य की शिक्षा मे लाभप्रद ।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

(5)

"सामाजिक अधिगम सिद्धान्त"
प्रवर्तक - अलबर्ट बाण्डुरा (कनाडा)

↳ दूसरो को देखकर उनके अनुरूप व्यवहार करने के कारण अथवा दूसरो के व्यवहारो को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारो को धारण करने तथा अमान्य व्यवहारो को त्यागने के कारण ही यह सामाजिक अधिगम कहलाता है।

↳ बाण्डुरा ने सामाजिक अधिगम पर अपने सम्पूर्ण व्यावसायिक जीवन में कार्य किया।
उन्होने अपने सिद्धान्त (सामाजिक अधिगम सिद्धान्त) को सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त नाम दिया है,
बाण्डुरा को कुछ लोग संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक मानते है। क्योंकि इन्होने अभिप्रेरणात्मक कारकों व स्व-नियंत्रण तंत्र को व्यक्ति के व्यवहार के लिए उत्तरदायी माना है। वातावरणीय कारकों को महत्व नही दिया गया।
नोट: उन्हे संज्ञानात्मक आन्दोलन का प्रवर्तक माना जाता है।

बाण्डुरा के प्रयोग → 1. बॉबो डॉल स्टडीज
2. जीवित जोकर

प्रयोगो के द्वारा विभिन्न चरण स्थापित किए =
↳ (A) ध्यान - निरीक्षण कर्ता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मॉडल आकर्षक, लोकप्रिय, रोचक, होने चाहिए।
(B) धारण - व्यक्ति व्यवहारों को अपने मस्तिष्क में प्रतिमाओं के रूप में अथवा शाब्दिक वर्णन के रूप में संग्रह कर लेते है।
(C) पुनः प्रस्तुतीकरण - व्यवहार का पुनप्रस्तुतीकरण
(D) पुनर्बलन - व्यवहार का पुनः प्रस्तुतीकरण करने पर व्यक्ति को सकारात्मक या नकारात्मक पुनर्बलन प्रदान करना।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* सामाजिक अधिगम के सिद्धान्त मे व्यक्ति अपने आपको निम्न क्रियाओ द्वारा सन्तुलित रखता है।

A. स्वनियंत्रण — I. स्व-निरिक्षण
II. विवेकपूर्ण निर्णय
III. स्व अनुक्रिया

B. स्व-निर्देश

C. स्व-पुनर्बलन

* सामाजिक अधिगम के शैक्षिक महत्व * (अभिप्रेत)

=* शिक्षक को छात्रो के व्यक्तित्व निर्माण के लिए उनके सामने आदर्श व्यवहार वाले प्रतिमान (मॉडल) प्रस्तुत करने चाहिए

=* विद्यालय या कक्षा-कक्ष में बुरे व्यवहार को उपस्थित नही होना।

=* विद्यार्थी अन्य व्यक्तियो के निरीक्षण द्वारा बहुत कुछ सीख सकते है

=* शिक्षण के द्वारा नवीन व्यवहारो को सिखाने के लिए अध्यापको के लिए प्रतिरूपण मॉडल एक विकल्प है।

=* अध्यापक विद्यार्थियो के समक्ष विविध प्रकार के मॉडल को प्रस्तुत करे। इस तकनीक से परम्परागत ढांचे में ढलने से मुक्त होने की प्रेरणा मिलेगी।

=* विद्यार्थियो के व्यवहार को नियांत्रित करने में स्वनियंत्रण जैसी प्रभावी विधी कोई नही है।

=* व्यवहार के लक्ष्य निर्धारित किए जाए, विद्यालय में शैक्षिक कार्यक्रमो को लक्ष्यो के अनुरूप चलाया जाए।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

(6)

- पुर्नबलन का सिद्धान्त
- प्रबलन / सबलीकरण का सिद्धान्त
- क्रमबद्ध व्यवहार सिद्धान्त
- चालक न्यूनता सिद्धान्त / प्रबलन ह्रास का सिद्धांत
- परिष्कृत सिद्धान्त
- यथार्थ सिद्धान्त
- तार्किक निगमनात्मक सिद्धान्त
- आवश्यकता न्यूनीकरण सिद्धान्त
- जैविकीय अनुकूलन सिद्धान्त
- गणितीय सिद्धान्त

प्रतिपादन - क्लार्क हल - 1943 में अपनी पुस्तक Principle of Behaviour के अन्तर्गत किया।

- आवश्यकता की पूर्ति करना - इस सिद्धान्त का मुख्य तत्व

- थार्नडाइक का कहना है कि अनुक्रिया उद्दीपन के कारण होती है जबकि क्लार्क हल - अनुक्रिया उद्दीपन के कारण न होकर आवश्यकता के कारण होती है, मानते है।

- क्लार्क हल ने चूहे पर प्रयोग किया
- भूलभूलैया में चूहे को बैठाया चूहे को भूख लगती है तो वह सूंघते हुए खाने की ओर जाकर पेट भरता है और यदि प्यास लगती है तो पानी की ओर जाता है।

* क्लार्क हल ने इस सिद्धान्त में एक सूत्र का प्रतिपादन किया
(B = D X H)

B = Behaviour - व्यवहार, D - Drive - चालक
H - Habit (आदत)

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

क्लार्क के अनुसार -
* सीखना आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया के द्वारा होता है।

* स्किनर के अनुसार -

Need-(आवश्यकता) → Drive (चालक) → Activity (क्रिया)
Goal (लक्ष्य) → Reduced drive (चालक न्यून)

* पुनर्बलन के शैक्षिक महत्व *

* आवश्यकता की पूर्ति के लिए उठाया गया हर कदम जो सफल हो - व्यक्ति को पुनर्बलन देता है तथा व्यक्ति क्रमवद्ध तरीके से व्यवहार करता हुआ अपने चालक को शान्त करता है।
* यह सिद्धान्त आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल देता है।

* इस सिद्धांत में लक्ष्य या उद्देश्य स्पष्ट होते हैं।
* यह सिद्धांत थार्नडाइक एवं पावलव के अधिगम सिद्धांत पर आधारित है।

* बालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रमों का निर्माण करने में बल देता है।

* बालकों की क्रियाओं का वास्तविक जीवन से सम्बंध जोड़ने पर बल देता है।
* बालकों को प्रोत्साहन देकर अधिगम में वृद्धि की जा सकती है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

(7)

"तलरूप सिद्धान्त"

↳ प्रतिपादक - कुर्ट लेविन

↳ जीवन के वातावरण को अधिगम का आधार माना

↳ बालक वातावरण में अनेक प्रकार की कठिनाइयों को हल करता हुआ अपने उद्देश्य तक पहुंचता है वह सदैव उद्देश्यों से प्रेरणा प्राप्त करता है।

* उद्देश्य कभी धनात्मक तो कभी ऋणात्मक शक्तियां रखते हैं।

↳ शिक्षा में उपयोगी ये सिद्धान्त -

* अधिगम के लिए बालकों के समक्ष उचित वातावरण उपस्थित करना चाहिए -
* पाठ्यक्रम का उद्देश्य बालकों के अनुकूल होना चाहिए।
* बालकों को समस्या का ज्ञान और कार्य करने की प्रेरणा देनी चाहिए -

(8)

* लेविन का अधिगम सम्बन्धी क्षेत्र सिद्धान्त *

↳ 1890 में जन्मे कुर्ट लेविन जर्मन वैज्ञानिक -

↳ अधिगम सम्बन्धी क्षेत्र सिद्धांत को 1917 में विकसित -

क्षेत्र सिद्धान्त की सामान्य शब्दावली → मानव व्यवहार व्यक्ति और वातावरण दोनों का प्रतिफल है जिसे सांकेतिक रूप में $B = F(P, E)$ द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

B = Behaviour - व्यवहार

F = Field (क्षेत्र) - जीवन दायरा

P = Person - लोग (व्यक्ति) Psychological Person ✓

E - Environment - वातावरण - Psychological ~~Person~~ Environment ✓

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

→ कुर्टलेविन द्वारा तीन सम्प्रत्यय (विचार) दिए गए

(i) क्षेत्र या जीवन दायरा - यह व्यक्ति व वातावरण की अन्तःक्रिया का प्रतिफल है।

(ii) सदिश व कर्षण → ये दोनो शब्द भौतिक शास्त्र व मैकेनिक्स से लिए गए है।

सदिश - व्यक्ति की वह शक्ति जो उसे लक्ष्य के पास या दूर ले जाती है।

कर्षण - वातावरण में उपस्थित वह लक्ष्य जो व्यक्ति को आकर्षित व प्रतिकर्षित करता है।

(iii) तलरूप (टोपोलोजी) - यह शब्द गणित से लिया गया है. इसका प्रयोग आकृतियों के सन्दर्भ में किया जाता है व्यक्ति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न अवरोधको से गुजरता है तथा अपनी शक्ल की भिन्न-2 आकृतियाँ बनाता है लेकिन उसका स्वरूप वही रहता है जैसे -रबर बैण्ड ✓

→ इस सिद्धान्त में व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली बाधाओ को दूर करने के लिए सूझ-बूझ का प्रयोग करते है इसीलिए इसे लक्ष्य सूझ सिद्धांत कहते है।

* क्षेत्र सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएं *

→ यह सिद्धान्त अधिगमकर्ता और उसकी अधिगम प्रक्रिया को एक दूसरे के सापेक्ष मानकर उसके सही परिप्रेक्ष्य में आंकने का प्रयत्न करता है।

→ क्षेत्र सिद्धांत मे व्यक्ति मात्र जैविक प्राणी न होकर मनोवैज्ञानिक व्यक्ति माना जाता है जो मनोवैज्ञानिक वातावरण में विचरण करता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

→ लेविन के क्षेत्र सिद्धान्त में व्यवहारवादियों और मनोविश्लेषणवादियों ~~प्रतिपादित~~ को न के बराबर माना है
उद्दीपन अनुक्रिया व मूल प्रवृतियां तथा आन्तरिक शक्तियों को नकारा गया। इन्हें प्रेरित व संचालित प्रतिक्रिया न मानकर ऐसी उद्देश्यपूर्ण और विवेकजन्य ~~उद्दीपन~~ क्रिया माना है जिसे व्यक्ति किसी एक विशेष परिस्थिति में जो कुछ भी उसके जीवन क्षेत्र में मौजूद रहता है। उसको ध्यान में रखते हुए पूरी चेतना के साथ सम्पन्न करता है

→ लेविन का सिद्धान्त सामान्यीकृत भविष्यवाणी में विश्वास नहीं रखता।

(लेविन के क्षेत्र सिद्धान्त का शिक्षा जगत में महत्व)

→ अधिगमकर्ता को जैविक प्राणी ही न समझकर मनोवैज्ञानिक प्राणी समझा गया। जो अधिगम परिस्थिति में विशिष्ट दायरे में रह रहा हो।

→ लेविन का यह सिद्धांत बताता है कि सीखना सभी तरह से एक उद्देश्यपूर्ण और लक्ष्योन्मुख प्रक्रिया है।

→ क्षेत्र सिद्धान्त के अनुसार सीखना एक बहुत ही विवेकपूर्ण और उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य है।

→ क्षेत्र सिद्धांत अधिगम के क्षेत्र के उचित नियोजन संगठन और व्यवस्थीकरण के पक्ष में है

→ क्षेत्र सिद्धान्त शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समूह गतिशास्त्र की भूमिका को समुचित महत्व देता है।

→ अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के जीवन दायरों का विस्तृत रूप से सही ज्ञान होना आवश्यक है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

(9)

↳ चिन्ह पूर्णाकार सिद्धान्त / प्रतीक सिद्धान्त
↳ अव्यक्त सिद्धान्त / गुप्त अधिगम सिद्धान्त
↳ उद्देश्य पूर्ण अधिगम सिद्धान्त
↳ ज्ञान का मानचित्र सिद्धांत / संज्ञानात्मक नक्शा सिद्धांत

↳ प्रतिपादक - टॉलमैन
↳ प्रयोग - 1932 में चूहे पर
↳ चूहो के दो समूह बनाए A / B A व B
↳ उन्होने भूलभूलैया के एक स्थान पर भोजन रख दिया और A समूह के चूहो को भूलभुलैया में छोड़ दिया तो वे भोजन वाले स्थान पर शीघ्र पहुंच गए।

↳ और B समूह को बिना भोजन वाली भूलभूलैया में छोड़ दिया तो वे इतनी जल्दी भोजन वाले स्थान पर नही पहुंचे जितनी जल्दी A समूह वाले पहुचे।

↳ वापस भोजन रखकर B समूह के चूहो को भूल-भूलैया में छोड़ दिया तो वे भोजन वाले स्थान पर A समूह से भी शीघ्र पहुंच गए।
↳ B समूह को अधिगम पहले ही हो चुका था लेकिन उन्होने इसे व्यक्त नही किया इसीलिए इसे अव्यक्त अधिगम व गुप्त अधिगम भी कहते है।

↳ निष्कर्ष निकला कि उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रतीको का अनुसरण किया जाता है।
↳ प्राणी संज्ञानात्मक योग्यताओं के सहारे सम्पूर्ण परिस्थिति का मानसिक मानचित्र बना लेता है, इसीलिए इसे सिद्धान्त को संज्ञानात्मक मानचित्र सिद्धान्त भी कहा जाता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

(10)

- समीपता अनुबन्धन सिद्धान्त
- सामीप्य सम्बन्ध सिद्धान्त
- प्रतिस्थापन्न सिद्धान्त | स्थानापन्न सिद्धांत

* प्रतिपादक - गुथरी
* प्रयोग - तीन वर्षीय पीटर व खरगोश पर
* निष्कर्ष - कि उद्दीपक व अनुक्रिया के बीच समीपता स्थापित करनी चाहिए ताकि अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जा सके तथा उद्दीपक व अनुक्रिया के बीच अनुबंधन स्थापित किया जा सके।

* एडविन गुथरी सीखने मे पुनर्बलन अथवा अभ्यास दोनो को महत्वपूर्ण नही मानते।

* गुथरी के अनुसार सीखना एक ही प्रयास का परिणाम होता है इसीलिए इसे एकल प्रयास सिद्धांत भी कहा जाता।

* इस सिद्धांत के अनुसार अधिगम जन्मजात व अर्जित अनुक्रियाओ को दूसरे उद्दीपको की ओर विस्तारित अथवा प्रतिस्थापित करने की क्रिया है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

(11)

* कार्ल रोजर्स का अनुभवजन्य अधिगम सिद्धांत -

↳ प्रतिपादन - अमेरिकन मनोवैज्ञानिक कार्ल रेमंड रॉजर्स
↳ मानवतावादी विचारधारा में विश्वास करते हैं।
↳ अधिगम के दो प्रकार बताए -
(i) संज्ञानात्मक अधिगम (ii) अनुभाविक अधिगम -

* संज्ञानात्मक अधिगम का आधार मात्र ज्ञान की प्राप्ति ही होती है। जबकि अनुभवजन्य अधिगम का आधार मात्र ज्ञानार्जन नहीं बल्कि व्यक्ति विशेष की सम्पूर्ण प्रगति और उसके कल्याण में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है।

* आनुभाविक अधिगम का सम्बन्ध अर्जित ज्ञान को उपयोग में लाने से होता है, ऐसा अधिगम विद्यार्थी केन्द्रित होता है, विद्यार्थी की आवश्यकताओं एवं रुचियों की पूर्ति एवं संतुष्टि करना ही ऐसे अधिगम का उद्देश्य होता है।

* यह सिद्धांत अनुभव से सीखने पर बल देता है इस सिद्धांत के अनुसार बालकों को पुस्तकों के बोझ से नहीं लादना चाहिए बल्कि उन्हें स्वतंत्रता पूर्वक अधिगम करने देना चाहिए। इसके लिए शिक्षकों को विद्यालय में सेमिनार, कार्यशाला, परिचर्चाएं, शैक्षिक भ्रमण आदि कार्य नीतियों का आयोजन करना चाहिए ताकि बालक अनुभव करके सीख सके।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

- मैसलो का आवश्यकता- पदानुक्रमित सिद्धांत
  - मानवादीवादी विचारधारा सिद्धांत
    (मनोवैज्ञानिक - रोजर्स, मैसलो, ओहन हालर, मैकोम नाउल्स)
- मैसलो का यह सिद्धांत A Theory of Human motivation नामक अपने ग्रन्थ में 1943 में प्रस्तुत किया।
- 1954 में रचित motivation & Personality में अपने पूर्ण रूप में सामने आया।
- मैसलो ने मूलभूत (5) आवश्यकताओं को निचले से लेकर उच्चतर स्तरों पर क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया है।
- आत्मसिद्धि का सिद्धान्त भी कहा जाता है।

(आत्मसिद्धि एवं आत्म अभिव्यक्ति सम्बन्धी आवश्यकता)
(अपने आत्म का प्रकाशन - सामर्थ्य के पूर्ण विकास की आवश्यकता)

आत्मसम्मान बनाए रखने की आवश्यकता
(दूसरे सम्मान व प्रसिद्धि पाने की आवश्यकता)

स्नेह, प्यार, सम्बंध की आवश्यकताएं
(समूहविशेष का अंग व स्नेह करना)

(2) सुरक्षा सम्बंधी आवश्यकताएं
(खतरे से दूर सुरक्षित अनुभव की आवश्यकता)

(1) शारीरिक / दैहिक आवश्यकताएं
(भूख - प्यास आदि)

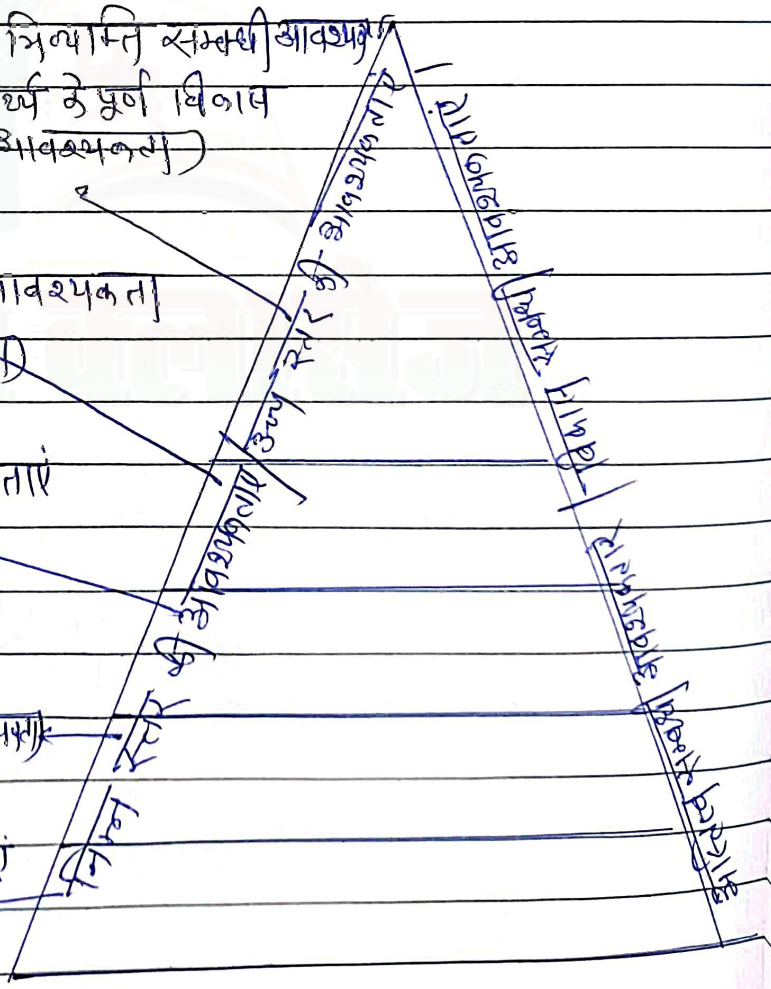

* मानवतावादी सिद्धांत को तीसरी शक्ति सम्बोधित किया।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

* मैसलो के अधिगम सिद्धांत की शैक्षिक उपयोगिता *

↳ विद्यार्थी स्वयं स्वानुशासन मे रहे वे ~~अच्छे~~ सदैव ही अच्छे परिणाम दिखाता है

↳ विद्यार्थियो को अनुभव प्रदान करते समय हर अवस्था में मानव की तरह ही उनके साथ व्यवहार करना चाहिए

↳ सभी तरह से आत्म की प्रतिष्ठा पर बल दिया जाना चाहिए और इस दृष्टि से सभी बालको को अपना आत्म सम्मान रखने, स्व की रक्षा करने के उचित अवसर दिए जाने चाहिए ✓

↳ शिक्षा की प्रक्रिया को बाल केन्द्रित ही बनाया जाना चाहिए ✓ स्वयं विद्यार्थी अपने अधिगम को सम्भा

↳ विद्यार्थी का अधिगम व्यवहार उसके आन्तरिक अभिप्रेरको से ही संचालित होना चाहिए क्योंकि एक अधिगमकर्ता उसी अवस्था मे अच्छी तरह सीखता है

↳ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जहां तक हो सके मानवीय आधार पर ही संगठित किया जाना चाहिए ✓

↳ विद्यार्थियो को न कभी सकारात्मक पुनर्बलन प्रदान किया जाना चाहिए और न ही उनकी आलोचना करके सजा देनी चाहिए - ये उचित विकास मे बाधक ✓

↳ शिक्षण और अधिगम की किसी भी योजना मे मानवीय शक्ति, क्षमता और जीवन के उच्चतम मूल्यो के विकास पर पूरा - ✓ ध्यान दिया जाना चाहिए ✓

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

(13)

* सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त *

↳ नए अनुभव ग्रहण करने, समस्याओं का हल ढूंढने और अपने व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने हेतु व्यक्ति विशेष प्राप्त सूचनाओं का जिस ढंग से प्रक्रियाकरण करते हैं उसी आधार पर अधिगम के जिन महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को विकसित किया गया है उन्हें ही मनोविज्ञान में अधिगम के सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त कहा गया है।

* (A) त्रिचरणी का सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धांत
* सिद्धान्त को प्रकाश में लाने का श्रेय
अटकिंसन व शिफरिन (1968, 1971) को जाता है।

त्रिचरण - (i) इन्द्रियानुभूत पंजीकरण स्तर
(ii) अल्पकालीन स्मृति स्तर
(iii) दीर्घकालीन स्मृति स्तर

* (B) प्रक्रियाकरण स्तर सम्बंधी सिद्धान्त :-
प्रकाश में लाने का श्रेय - क्रेक व लोखार्ट (1972)
मुख्य उद्देश्य - ✓ स्मृति केवल एक ही प्रकार की होती है
✓ सूचना का प्रक्रियाकरण गहनता से हो।

* (C) मिलर का सूचना प्रक्रियाकरण का सिद्धांत -
↳ अधिगम की प्रक्रिया का अध्ययन स्मृति के माध्यम से हल करने का प्रयत्न किया गया।
↳ मिलर 1956 से संज्ञानात्मक प्रक्रियाकरण के सभी स्तरों पर विषयवस्तु के सार्थक संगठन अथवा एनकोडिंग हेतु चंकिंग की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

⇒ मिलर के अनुसार मानव मास्तिष्क कम्प्यूटर की तरह ही सूचना सामग्री को अदा के रूप में स्वीकार करता है और प्रक्रिया के रूप में वांछित परिवर्तन लाता है।

⇒ मिलर के अनुसार प्रक्रियाकरण सिद्धान्त में तीसरी महत्वपूर्ण अवधारणा - टोट (TOTE) नाम से है। अभिप्राय - Test operate Test exits पदावली से है।

* (1) सूचना प्रक्रियाकरण का दोहरा कोडिंग सिद्धांत
प्रतिपादक - ए. पेविवो
शाब्दिक और अशाब्दिक दोनो प्रकार की सूचनाओं को दोहरी सार्थकता के कारण ही इसे सूचना प्रक्रियाकरण की दोहरी सार्थकता कहा जाता है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

↳ संरचनात्मकता / निर्मितवाद
↳ जैरोम ब्रूनर का संरचनात्मक अधिगम सिद्धांत -

↳ जैरोम ब्रूनर ने सीखने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे आधुनिक संज्ञानात्मक सिद्धांत की श्रेणी में रखा गया। संरचनात्मकता शब्द का अभिप्राय - अधिगमकर्ता के द्वारा स्वयं के लिए ज्ञान की संरचना से है व्यक्ति कैसे सीखते हैं व ज्ञान की प्रकृति क्या है।

① ↳ अंतर्दर्शी चिन्तन बनाम विश्लेषणात्मक चिंतन -
किसी विषय या पाठ का तात्कालिक ज्ञान या संज्ञान को ही अन्तर्दर्शन कहा जाता है।

② ↳ विषय की संरचना → प्रत्येक विषय या पाठ के कुछ विशेष सम्प्रत्यय, नियम तथा प्रविधियां होती है जिसे छात्रों को सीखना आवश्यक है।

③ ↳ अन्वेषणात्मक सीखना → किसी पाठ को सीखने की सबसे उत्तम विधि अन्वेषणात्मक सीखना है। छात्रों को किसी समस्याओं के विभिन्न पहलुओं पर स्वयं ही चिंतन करके अर्थ एवं सम्बन्धों की खोज करे।

④ ↳ सम्बद्धता का महत्व →
① सामाजिक सम्बद्धता
② व्यक्तिगत सम्बद्धता
ब्रूनर के अनुसार शिक्षा सिर्फ व्यक्तिगत रूप से ही नहीं बल्कि सामाजिक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के अनुरूप होनी चाहिए।

⑤ ↳ तत्परता - किसी भी उम्र या वर्ग के छात्र को कोई भी विषय को सीखने के लिए तत्पर किया जा सकता है।
शिक्षको का प्रधान कार्य छात्रो के अनुरूप पाठ्यक्रम को तैयार करना

⑥ शिक्षार्थी द्वारा स्वयं कार्य करने का महत्व →
छात्रो को सीखने की परिस्थिति में निष्क्रिय न होकर सक्रिय ढंग से भाग लेना चाहिए

निर्मितवाद

निर्मितवाद की उत्पति संज्ञानात्मक मनोविज्ञान क्षेत्र से हुई।
यह प्रतिमान - जीन पियाजे, जे एस ब्रूनर, गार्डनर वाइगोस्टकी, तथा गुडसेन के कार्यो पर आधारित।

↳ निर्मितवाद में प्रत्येक छात्र की सक्रियता से पूर्व ज्ञान एवं नवीन ज्ञान की अन्तःक्रिया से ज्ञान की संरचना होती है

↳ जॉन डीवी के अनुभव, चिन्तन व विचारो का निर्मितवाद पर प्रभाव है।

↳ निर्मितवाद की मान्यता यह है कि ज्ञान "बाहर" विद्यमान नही है। ज्ञान सीखने वाले व्यक्ति द्वारा अंदर संचारित किया जाता
↳ निर्मितवाद अनेक अधिगम परिप्रेक्ष्यो का संश्लेषण है इसका प्रभाव गणित शिक्षण व विज्ञान शिक्षण पर भी पड़ा।

↳ निर्मितवाद छात्र केन्द्रित है तथा यह पूर्व ज्ञान के अनुभवों पर बल देता है।
↳ शिक्षको को छात्रो के समक्ष अधिगम के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

अधिगम के प्रेरक -

जेरोम ब्रूनर के अनुसार- अधिगम के लिए प्रेरक-
बाह्य लक्ष्य या उच्च अंक की अपेक्षा विषय वस्तु मे रूचि है -
दो प्रमुख चर्चित पुस्तके ।

1. The process of Education
2. The relevance of Education - इसमे यह मानता है कि अध्यापक को अधिगम के उद्देश्यो से बालको का परिचय करना चाहिए जिससे की बालक कार्य करने के लिए पर्याप्त रूप से अभिप्रेरित होकर रूचि के साथ कार्य करे।

* निर्मितवाद के प्रकार *

निर्मितवाद के सिद्धांतो का आधार मनोविज्ञान एवं ज्ञान मीमांसा है। - दो मूल प्रारूप निम्न ।

① पियाजे का संज्ञानात्मक निर्मितवाद - इसके अनुसार विद्यार्थी वैयक्तिक रूप से अपने संसार में बौद्धिक संरचनाओ को स्वीकारते है इसमे व्यक्ति अकेला अर्थ निकालता है वह किसी के साथ नही होता अर्थात स्वयं की योग्यता अनुसार कार्य करता है।

② सामाजिक निर्मितवाद - इसके भी दो भाग है।
① व्यक्ति ② सामाजिक

* शिक्षा मे महत्व | शिक्षको द्वारा किए जाने वाले कार्य -

- शिक्षको को पूर्वाग्रह द्वारा छात्रो के चिंतन को चुनौती देना -
- निर्मितवाद हेतु पूर्वज्ञान के अनुभव के परीक्षण पर बल देना चाहिए -
- विषय वस्तु व अधिगम प्रविधि, दोनो को प्रधानता दे।
- अधिगम निर्मितवादी प्रक्रिया है जिसे छात्रो को पूरा करना है।
- शिक्षक द्वारा छात्रो के बोध का परीक्षण करना चाहिए

* महत्वपूर्ण तथ्य *

* अर्थपूर्ण शाब्दिक अधिगम सिद्धान्त - डेविड आसुबेल ने दिया
* संलग्नात्मक सिद्धान्त के प्रतिपादक - पियाजे।

* अचानक सूझ या अन्तर्दृष्टि उत्पन्न होने को "अहा अनुभव" कहते हैं
* गेस्टाल्टवाद का उदय - जर्मनी से हुआ

* ~~मानवतावादी~~ मानवतावादी सिद्धान्त के प्रवर्तक - रोजर्स
* साहचर्य सिद्धान्त का प्रतिपादन - एलेक्जेंडर बेन ने -
* सामाजिक अधिगम सिद्धांत - अलबर्ट बांडुरा ने

* सामीप्य सम्बंधवाद का सिद्धांत - गुथरी
* S-R Theory के जन्मदाता - थार्नडाइक

* संरचनात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन - जेरोम ब्रूनर
* गेस्टाल्ट जर्मन भाषा का शब्द - जिसका अर्थ - पूर्णाकृति या समग्राकृति

* बालकों को प्रोत्साहन देकर अधिगम में वृद्धि की जा सकती है।
* हॉनजिक व ब्लोजेर सीखने के लिए पुनर्बलन को आवश्यक नहीं मानते।

Join us on Telegram
YouTube
Websites
DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:- राजस्थान क्लासेज

अधिगम स्थानान्तरण

* स्थानान्तरण का अर्थ एवं परिभाषा *

→ अभिप्राय - किसी सीखी हुई क्रिया या विषय का अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने से है।

* सोरेन्सन - स्थानान्तरण एक परिस्थिति की में अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण और आदतों का दूसरी परिस्थिति में स्थान्तरित किए जाने का उल्लेख करता है।

* को व को - सीखने के एक क्षेत्र में प्राप्त होने वाले ज्ञान या कुशलताओं का और सोचने, अनुभव करने या कार्य करने की आदतों का सीखने के दूसरे क्षेत्र में प्रयोग करना साधारणतः प्रशिक्षण को स्थानान्तरण कहा जाता।

* अण्डरवुड - वर्तमान क्रियाओं पर पूर्व अनुभवों के प्रभाव को प्रशिक्षण अन्तरण कहते हैं।

* हिलगार्ड एवं एटकिंसन → एक कार्यों को सीखने का आगामी कार्यों को सीखने अथवा करने ~~पड़ने~~ पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रशिक्षण अंतरण कहते हैं।

* कोलेस्निक → स्थानान्तरण पहली परिस्थिति में प्राप्त ज्ञान, कौशल, आदतों, दृष्टिकोण या अन्य क्रियाओं का दूसरी परिस्थिति में अनुप्रयोग करना है।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

* अधिगम स्थानान्तरण के प्रकार *

① सकारात्मक स्थानान्तरण - जब एक परिस्थिति में अथवा एक विषय में सीखा गया ज्ञान किसी नवीन परिस्थिति या विषय को सीखने में सहायता करता है तो उसे सकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं।
उदाहरणार्थ जो व्यक्ति साइकिल चलाना सीख जाता है तो वो मोपेड चलाना भी आसानी से हो जाएगा।

② नकारात्मक स्थानान्तरण -
जब एक परिस्थिति में सीखा गया ज्ञान नवीन ज्ञान के सीखने में बाधा उत्पन्न करता है तो उसे नकारात्मक स्थानान्तरण कहा जाता है।

③ शून्य स्थानान्तरण - जब एक कार्य का प्रशिक्षण दूसरे कार्य को सीखने में न तो सहायता ही करता है और न ही बाधा उत्पन्न करता है तो इस प्रकार के प्रशिक्षण को शून्य स्थानान्तरण कहते हैं।

* अधिगम अन्तरण के सिद्धान्त *

① मानसिक शक्तियों अथवा औपचारिक अनुशासन का सिद्धांत
जैसे - तर्क शक्ति, विचार शक्ति, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति निर्णय शक्ति आदि, ये सभी शक्तियां निश्चित प्रकार की होती तथा यह स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं।

② समान तत्वों का सिद्धांत - प्रतिपादन - थार्नडाइक ने
इनके अनुसार एक विषय का अध्ययन दूसरे विषय के अध्ययन में तभी सहायक सिद्ध होता है जबकि इन दोनों विषयों में कुछ तत्व समान हो।

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

③ सामान्यीकरण का सिद्धांत –
प्रतिपादक - चार्ल्स एच० जुड (Judd)
सिद्धांत के अनुसार कोई व्यक्ति अपने किसी-कार्य ज्ञान या अनुभव से कोई सामान्य नियम या सिद्धांत निकाल देता है, वह उस सामान्यीकृत सिद्धांत का दूसरी परिस्थिति में प्रयोग कर सकता है।

④ विशिष्ट तत्व व सामान्य तत्वो का सिद्धांत
प्रतिपादक - स्पीयर मैन
सिद्धांत के अनुसार मनुष्य में दो प्रकार की बुद्धि
① सामान्य ② विशिष्ट
आमतौर पर जीवन में सामान्य बुद्धि का ही उपयोग किया जाता है तथा जहां एक विशिष्ट बुद्धि का प्रश्न है वह हर व्यक्ति में भिन्न होती है। उनके विचार से अन्तरण विशिष्ट योग्यता में न होकर सामान्य योग्यता में होता है।

⑤ आदर्शो व मूल्यो का सिद्धांत →
प्रतिपादक - बागले
उनके अनुसार अंतरण का सम्बंध इतना वस्तुओं या बातों से नही होता, जितना कि उस बात को अन्तरित करने वाले व्यक्ति के आदर्शो से होता है।

⑥ पूर्णाकारवाद / अवयवी सिद्धांत →
प्रतिपादक - कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर
इनके अनुसार जब तक दो परिस्थितियो का सम्पूर्ण रूप से एक समुच्चय ज्ञान की उपलब्धि सहज भाव में होकर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अवयव नही बन जायेगी तब तक एक क्षेत्र का ज्ञान दूसरे क्षेत्र के ज्ञान में स्थानान्तरित नही हो सकेगा।

* संयोजनवाद का सिद्धान्त → प्रवर्तक - थार्नडाइक
संयोजनवाद की परिभाषा - एल - रेन ने इस प्रकार दी - संयोजनवाद वह सिद्धान्त है, जो समस्त मानसिक प्रक्रियाओं को परिस्थितियों और अनुक्रियाओं के बीच मूल एवं अर्जित संयोजन का कार्य मानता है।

* अधिगम स्थानान्तरण को प्रभावित करने वाले तत्व *

① सीखने की इच्छा
② विषयवस्तु की समानता
③ सीखने वाले की मानसिक योग्यता
④ प्रशिक्षण एवं अभ्यास
⑤ शिक्षण - विधियों में समानता
⑥ अवबोध या समझ
⑦ विषय के प्रति मनोवृति
⑧ सामान्यीकरण की योग्यता

*सिद्धान्तों के प्रतिपादक *
* → समरूप तथ्यों का सिद्धान्त → थार्नडाइक
* → सामान्यीकरण का सिद्धांत - चार्ल्सजुड एवं
* → आदर्शों एवं मूल्यों का सिद्धांत - डब्ल्यू सी बगले
* → सामान्य व विशिष्ट तत्वों का सिद्धांत - स्पीयरमैन
* → अवयवीवादी सिद्धांत → कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर
* → संयोजनवाद का सिद्धांत - थार्नडाइक

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-राजस्थान क्लासेज

इन्हें भी जरुर पढ़े?

SUBSCRIBE US ON WEBSITE RAJASTHAN CLASSES

- विषय अनुसार इ-बुक देखे यहाँ से
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

कम्प्यूटर ज्ञान

SUBSCRIBE US ON WEBSITE RAJASTHAN CLASSES

YouTube

Websites

SUBSCRIBE US ON WEBSITE RAJASTHAN CLASSES

सामान्य ज्ञान
5000+ प्रश्न
For All Exam's
Free Download

SSC Exam's
CGL-CHSL-MTS-GD
Top Questions

राजस्थान सामान्य ज्ञान
हस्तलिखित नोट्स
निशुल्क डाउनलोड

Latest Job's Update
See All Update
Exam Date News

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's

PTET 2022
Complete Course
यहां से डाउनलोड करें

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

BSTC 2022
Complete Course
यहां से डाउनलोड करें

राजस्थान पुलिस कांस्टेबल
Complete Course
~~301/~~ - Now Free

भारत सामान्य ज्ञान
सम्पूर्ण टेस्ट क्विज
अपनी तैयारी को परखें

वनरक्षक वनपाल
सम्पूर्ण कोर्स
अब वर्दी लेना तय

टॉप 1000 प्रश्न
ई - बुक सामान्य ज्ञान
डाउनलोड करलो

Join us on Telegram

YouTube

Websites

DAILY PDF के लिए JOIN कीजिए:-

RAJASTHAN CLASSES

राजस्थान क्लासेज